के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय का 16वाँ दीक्षान्त समारोह–2020

अच्युत सामंत

'स्नातक' की उपाधि प्राप्त कर लेना ही पढ़ाई का अंत नहीं है, बल्कि यह केवल कैरियर की एक शुरुआत है। विश्वविद्यालय में नामांकित प्रत्येक छात्र दीक्षांत समारोह के दिन की प्रतीक्षा करता है कि उसे स्नातक की डिग्री प्राप्त हो। यह दिन प्रत्येक छात्र के जीवन में एक लम्बे अंतराल के बाद आता है, लेकिन विश्वविद्यालय के लिए यह एक वार्षिक कार्यक्रम है। दीक्षांत दिवस अतीत की उपलब्धियों से लेकर भविष्य में प्राप्त होने वाले लक्ष्यों तक की यात्रा का एक प्रतिबिंब है। हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी के.आई.आई.टी. अपना दीक्षांत समारोह आयोजित कर रहा है। हालांकि, महामारी के कारण पिछले सभी वर्षों से यह भिन्न है, फिर भी कोविड–19 प्रोटोकॉल को बनाए रखते हुए इसे यथासम्भव सर्वश्रेष्ठ तरीके से संचालित करने का हमारा पूरा प्रयास है। दिनाँक 21 नवंबर 2020 को मनाया जाने वाला 16वां दीक्षांत समारोह, के.आई.आई.टी. डीम्ड विश्वविद्यालय के लिए एक बड़ा दिन होगा जो गत 17 वर्षों में विश्वविद्यालय के रूप में एवं 23 वर्षों से एक संस्थान के रूप में तेजी से आगे बढ़ा है और यह छात्रों और कर्मचारियों के लिए एक नई यात्रा की शुरुआत का प्रतीक है।

के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय ने 25 वर्षों के अल्प समय में वैश्विक और भारतीय शैक्षणिक मानचित्र में अपना एक स्थान बनाया है। वर्ष 1992–93 में मात्र 5000/– के प्रारंभिक धन (100 डॉलर के समतुल्य) से इसकी शुरुआत हुई थी। इसने अपना पंख पसारना आरम्भ किया और आगे बढ़ते हुए वर्ष 1997 तक एक गुणवत्तापरक शैक्षणिक केंद्र बन गया। यह के.आई.आई.टी. की उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्धता थी जिसके कारण वर्ष 2004 में इसे विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। के.आई.आई.टी. को मात्र 6 वर्षों में विश्वविद्यालय का दर्जा पाने वाला देश का सबसे नवोदित (युवा) संस्थान होने का गौरव प्राप्त है। स्नातक, स्नातकोत्तर, डॉक्टरेट और पोस्ट–डॉक्टरेट की पढ़ाई इस विश्वविद्यालय में होती है, जो 28 विद्यालय सहित 25 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है। भारत सरकार द्वारा इसे 'इन्स्टीच्यूशन ऑफ एमिनेन्स' (प्रख्यात संस्थान) के रूप में मान्यता दी गई है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश के स्व–वित्तपोषण संस्थानों को दिये जाने वाले वर्ष 2020 के अटल रैंकिंग ऑफ इंस्टीच्यूशंस ऑन इनोवेशन एचीवमेन्ट्स (ए.आर.आई.आई.ए.) की रैंकिंग में के.आई.आई.टी. को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। ''दी टाइम्स हायर एजूकेशन वर्ल्ड यूनीवर्सिटी रैंकिग्स 2021'' द्वारा के.आई.आई.टी. के कंप्यूटर विज्ञान संकाय (बिनसजल) को 501–600 के बैंड में स्थान दिया गया है। यह भी उल्लेख करना उचित होगा कि के.आई.आई.टी. को अपनी इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी शाखाओं (जतमंउे) के लिए 601–800 बैंड में स्थान दिया गया है।

के.आई.आई.टी. एक अद्वितीय डीम्ड विश्वविद्यालय है, क्योंकि यह छात्र और अभिभावक के लिए मैत्रीपूर्ण विश्वविद्यालय है। भारत के कोने–कोने से एवं 55 देशों से 30,000 छात्र–छात्राएँ यहाँ अध्ययन के लिए आते हैं और विश्वविद्यालय में उन्हें घर जैसी छात्रावास की सुविधा प्रदान की जाती है। 95 फीसदी छात्र ओडिशा के बाहर के हैं। यह संस्कृतियों के एकीकरण का एक बहुआयामी विश्वविद्यालय है, जो एकता की चमक बिखेरते हुए विविधता के एकत्रीकरण का एक महत्वपूर्ण केन्द्रबिंदु है। शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के बीच सामन्जस्यता, ट्यूटर–मेन्टोर प्रणाली के माध्यम से प्राप्त की जाती है, जो न केवल छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन की निगरानी करते हैं, बल्कि उन्हें व्यक्तिगत स्तर पर नियमित रूप से परामर्श भी देते हैं। बच्चों का दाखिला होने के उपरान्त उनकी पढ़ाई–लिखाई एवं देखभाल की जिम्मेवारी के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय के प्रबन्धन द्वारा इस सिद्धान्त के तहत किया जाता है, जैसे अभिभावकगण अपने बच्चों की देखभाल करते हैं। के.आई.आई.टी. अपनी स्थापना के समय से ही लगातार अपने छात्रों का 100 प्रतिशत प्लेसमेन्ट बरकरार रखे हुए है। के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय के लिए छात्रों की भलाई ही उनकी सबसे बड़ी जिम्मेवारी है। कैम्पस के अन्तर्गत एक सुपर–स्पेशियलिटी अस्पताल है, जो व्यापक स्तर पर जनता की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा करने के साथ–साथ छात्रों और कर्मचारियों के स्वास्थ्य का ध्यान रखता है। के.आई.आई.टी. ने 'वर्कप्लेस ऑफ दी ईयर' के लिए दी टाइम्स हायर एजूकेशन (टी.एच.ई.) का ''दी एवार्ड एशिया 2020'' भी जीता है।

के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय अपने अनुसंधान और प्रकाशन के लिए जाना जाता है। विभिन्न स्कूलों द्वारा परिसर के अन्दर प्रकाशनों के अतिरिक्त विभिन्न स्कूलों के शोधकर्ता और फेक्लटी मेम्बर नियमित रूप से

प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में अपने शोध पत्र प्रकाशित करते हैं। लेखकीय पुस्तकें, जो विदेशों में और संयुक्त परियोजनाओं पर शोध करने के लिए अनुसंधान परियोजनाएं और फैलोशिप प्राप्त करते हैं। वर्तमान में लगभग 100 अनुसंधान और कंसल्टेंसी परियोजनाएं विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फंडिंग एजेंसियों द्वारा पर्याप्त बजट परिव्यय के साथ वित्तपोषित हैं। पिछले कुछ वर्षों में अत्याधुनिक सुविधाओं और इन्फ्रास्ट्रक्चर के उत्तरोत्तर विकास के साथ, के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय एम.आई.सी.ई. पर्यटन के लिए सबसे अधिक मांग वाला दर्शनीय स्थल बन गया है। यह भारत का एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जिसके परिसर में अब तक 22 नोबेल पुरस्कार विजेता भ्रमण कर चुके हैं, साथ ही उन्होंने छात्रों को संबोधित भी कर चुके हैं। शिक्षा के क्षेत्र में विश्व स्तर पर प्रशंसित केन्द्र बनाने के उद्देश्य से दुनिया भर में शिक्षा के मानको को वैश्विक दृश्यता को बढ़ाने में शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण को गले लगाने के लिए दुनिया भर में दूर–दूर के विश्वविद्यालयों में सहयोग हेतु अन्तर्राष्ट्रीय संघों में छात्र और फैकल्टी आदान–प्रदान, अनुसंधानिक सहयोग और सदस्यता की सुविधा प्रदान कर रहा है।

'रियो ओलंपिक–2016' में के.आई.आई.टी. की एक छात्रा दुती चाँद ने भारत का प्रतिनिधित्व किया और वर्ष 2018 के एशियाई खेलों में 2 रजत पदक जीते। वर्ष 2019 में आयोजित दुनिया के विश्वविद्यालय खेलों में गोल्ड जीतने वाली वह प्रथम भारतीय खिलाड़ी हैं। के.आई.आई.टी. के छात्र अमिया मलिक भारत के सबसे तेज धावक हैं। के.आई.आई.टी. के पास कई खेल प्रतियोगिताओं व आयोजनों के लिए पर्याप्त स्थान सहित विशाल खेल इन्फ्रास्ट्रक्चर है। शैक्षणिक उपलब्धियाँ आदर्शपूर्ण एवं अनुकरणीय हैं। के.आई.आई.टी. के पूर्व छात्र कॉरपोरेट्स, व्यवसाय, स्टार्टअप्स, शिक्षा, न्यायालय, सिविल सेवा आदि क्षेत्रों में सम्मानजनक पदों पर आसीन हैं।

यह सामाजिक कार्य के साथ औपचारिक शिक्षा को एकीकृत करने वाला विश्व का एकमात्र विश्वविद्यालय है। के.आई.आई.टी. के मानवीय चेहरे को सबसे अच्छे ढंग से कलिंगा इन्स्टीच्यूट ऑफ सोसल साइन्सेज (के.आई.एस.एस.) के माध्यम से दर्शाया गया है, जो 30,000 वंचित आदिवासी बच्चों को बालवाड़ी से लेकर स्नातकोत्तर तक की निःशुल्क शिक्षा, भोजन, आवास, स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करता है। के.आई.एस.एस. विश्व का पहला जनजातीय विश्वविद्यालय है, जो के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय का सहयोगी संस्थान है। के.आई.आई.टी. ने ओडिशा में कटक जिले के दूरवर्ती गाँव 'कलारबंका' को 2006 में एक आदर्श गाँव में परिवर्तित किया और उसके बाद 2016 में स्मार्ट गाँव में तब्दील कर दिया। साथ ही मानपुर पंचायत को शहर की सभी सुविधाएँ मुहैया कराते हुए एक मॉडल पंचायत (गाँवों का समूह) में बदल दिया। के.आई.आई.टी. और के.आई.एस.एस. के आस–पास के के इलाके को पूर्ण विकसित विकसित बस्ती मे परिणित कर दिया। यहाँ तक कि सर्वव्यापी कोविड–19 महामारी के दौरान भी के.आई.आई.टी. विश्वविद्यालय भी सबसे आगे आया और इस दौरान राज्य में कोरोना मृतक आश्रित बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा का आश्वासन देने के साथ–साथ तीन लाख व्यथित लोगों तक पहुँचकर उन्हें भोजन, राशन और आवश्यक सामानों की आपूर्ति की। कोविड–19 के दौरान सैकड़ों अनाथों की देखभाल की गई, साथ ही, ओडिशा के चार जिलो में 1200 बेडेड वाले चार स्टैंडअलोन कोविड अस्पतालों की स्थापना की गई जो अभी कोरोना मरीजों का उपचार कर रहे हैं और अप्रैल 2020 से ओडिशा के ग्रामीण इलाकों में के.आई.एस.एस. के 30,000 बच्चों के दरवाजे पर अध्ययन सामग्री के साथ सूखे खाद्य पदार्थों को पहुँचाया जा रहा है।

इस प्रकार, के.आई.आई.टी. की यात्रा में सबसे बड़ा पाठ मानवता, करुणा और नवीनता की सीख का है। 'कुछ नहीं' से इस प्रसिद्धि के मुकाम तक पहुँचने की विश्वविद्यालय की सफलता एक उदाहरण है कि कुछ भी असंभव नहीं है। नैतिकता, सिद्धांतों और मानवता से समझौता किए बिना लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्तिविशेष कड़ी मेहनत करके सफलता प्राप्त कर सकता है और इसे बनाए रख सकता है। वर्ष 2020, कोरोना वायरस से लड़ने जैसे धूमिल क्षणों को इतिहास याद रखेगा कि यह उन छात्रों और युवाओं के लिए नहीं है जो खो गए हैं, या परिस्थिति के अनुरूप उन्होंने अपने आपको बदल लिया है। इतिहास की लम्बी चिन्गारी हमें यह बताती है कि हमारे पास आशावादी होने के लिए हर कारण है।

संस्थापक, के.आई.आई.टी. एवं के.आई.एस.एस.
भुवनेश्वर, ओडिशा